जनसंख्या भूगोल

हरीश कुमार खत्री

कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल

जनसंख्या भूगोल

(Geography of Population)

लेखक

हरीश कुमार खत्री

एम.ए.

(एम.फिल., बी.एड., डी.एस.एम., आयुर्वेद रत्न)

कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल

दो शब्द

विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए प्रत्येक देश के लिए उसकी **''जनसंख्या भूगोल''** विषय का भी महत्व बढ़ते जा रहा है। जनसंख्या में परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। प्रत्येक क्षेत्र चाहे वह देश हो या महाद्वपीय जनसंख्या की संरचना पर ही उसका विकास निर्भर होता है। इसलिए प्रत्येक देश के लिए उसकी जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक हो गया है।

विद्यार्थियों व पाठकों को बताते हुये अत्यंत खुशी हो रही है कि प्रस्तुत पुस्तक **''जनसंख्या भूगोल''** विश्व एवं भारत के नवीनतम जनगणना आँकड़ों 2011 (अंतरिम) पर आधारित है। परन्तु पुस्तक में जनंसख्या भूगोल की प्रकृति, विषय क्षेत्र, जनांकिकी आँकड़े, स्रोत, विश्व जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व, जनसंख्या की संरचना, जनसंख्या प्रक्षेपण, प्रवास, जनसंख्या के सिद्धान्त, जनसंख्या नीतियाँ एवं जनसंख्या का पर्यावरण से संबंध आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक की रचना में जिन भारतीय व विदेशी विचारकों, विद्वानों की रचनाओं, लेखों, अभिमतों का सहारा लिया गया है, उन सबका मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि उनके विचारों को विषय की विचारधारा से जोड़े बिना विद्यार्थियों को विषय विवेचन का ज्ञान कराना असंभव था। पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं श्रेष्ठ बनाने के लिये पूरा प्रयास किया गया है। इस हेतु सरल और सुबोध भाषा-शैली का प्रयोग कर विषय की गहराई को ध्यान में रखते हुए नवीन अवधारणाओं एवं प्रवृत्तियों की यथास्थान स्पष्ट विवेचना की गई है।

आशा है वर्तमान स्वरूप में यह पुस्तक विद्यार्थियों की इस विषय से संबंधित सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगी। पुस्तक के कलेवर को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु पाठकों के सुझावों का हम हृदय से स्वागत करेंगे।

● हरीश कुमार खत्री

पाठ्यक्रम

इकाई– 1 जनसंख्या भूगोल की प्रकृति तथा विषय क्षेत्र, विशिष्टीकरण के क्षेत्र के रूप में जनंसख्या भूगोल का विकास, इस जनसंख्या भूगोल का जनांकिकी से संबंध, जनसंख्या आँकड़ों के स्रोत एवं आँकड़ों की विश्वसनीयता, जनसंख्या आँकड़ों के मानचित्रीकरण की समस्या।
Nature and scope of Population Geography. Development of Population Geography as field of specialization. Its relation with the Demography. Sources of population data, their problems, mapping the population data.

इकाई– 2 जनसंख्या वितरण एवं घनत्व, जनसंख्या वृद्धि, सैद्धांतिक मुद्दे, विश्व प्रतिरूप तथा निर्धारक कारक।
Population distribution and density : Growth of population theoretical issues, world pattern and their determinants.

इकाई– 3 जनसंख्या संगठन, आयु एवं लिंग संगठन, साक्षरता और शिक्षा, व्यावसायिक संरचना, नगरीकरण, विश्व के जनसंख्या प्रदेश।
Population Composition - Age and Sex Composition : Literacy and education, occupational structure, Urbanization, Population Regions of the World.

इकाई– 4 जनसंख्या की गत्यात्मकता, प्रजननता एवं मर्त्यता का मापन, प्रजननता एवं मतर्यता का विश्व प्रतिरूप, जनांकिकी प्रत्यावर्तन, अंतर्राष्ट्रीय प्रवास।
Population Dynamics : Measurement of Fertility and Mortality; World patterns of fertility and mortality. Demographic Transition, International Migration.

इकाई– 5 जनसंख्या तथा संसाधन विकास, अनुकूलतम जनसंख्या एवं न्यून जनसंख्या एवं अति जनसंख्या की संकल्पना। जनसंख्या के सिद्धान्त-माल्थस, वृद्धि की सीमायें, विश्व की जनसंख्या समस्यायें।
Population and Resources Development : Concept of optimum population, under population and over population. Theories of population. Malthus, limits to growth. Population-Resource regions of the World.

●●●

अनुक्रमणिका

1. जनसंख्या भूगोल की प्रकृति तथा विषय क्षेत्र 01
(Nature and Scope of Population Geography)

2. जनांकिकी आँकड़े व उनके स्रोत 14
(Demographic Data and its Sources)

3. विश्व जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व 33
(Distribution & Density of World Population)

4. विश्व जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति 70
(Trend of Population Growth in the World)

5. भारत की जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व 81
(Distribution & Density of Indian Population)

6. जनसंख्या की संरचना : आयु तथा लिंग अनुपात 105
(Population Composition : Age and Sex Ratio)

7. जनसंख्या की संरचना : साक्षरता, शिक्षा एवं नगरीयकरण 123
(Population Composition : Literacy, Education & Urbanization)

8. जनसंख्या की संरचना : धर्म एवं भाषा 160
(Population Composition : Religion & Language)

9. जनसंख्या की संरचना : सामाजिक, आर्थिक और व्यावसायिक 187
(Population Composition : Social, Economic & Occupational)

10. जनसंख्या जनांकिकी - प्रजननता व मर्त्यता (जन्मदर व मृत्युदर) 197
(Population Demographic - Fertility & Mortality)

11. जनसंख्या प्रक्षेपण 214
(Population Launching)

12. प्रवास स्थानांतरण 222
(Migration)

13. जनसंख्या के सिद्धान्त..... 247
(Theories of Population)

14. जनसंख्या नीतियाँ 264
(Population Policies)

15. जनसंख्या एवं पर्यावरण 274
(Population & Environment)

●●●

1

जनसंख्या भूगोल की प्रकृति तथा विषय क्षेत्र
(NATURE AND SCOPE OF POPULATION GEOGRAPHY)

आधुनिक युग में भूगोल का क्षेत्र (Scope) दिनोंदिन बढ़ते जा रहा है और उसमें भी जनसंख्या भूगोल का अपना विशेष महत्व है। विश्व में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। 2012 के विश्व जनसंख्या आकड़ों पर दृष्टि डाले तो पता चलता है कि विश्व की जनसंख्या लगभग 7 अरब हो चुकी है। बढ़ती हुई जनसंख्या अनेक समस्याएँ लेकर हमारे सामने खड़ी है।

भूगोल विषय में मानव केन्द्रीय महत्व वाला मौलिक तत्व है। वह जीविकोपार्जन हेतु प्राकृतिक वातावरण से विभिन्न रूपों में सामन्जस्य स्थापित करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उसमें संशोधन एवं परिष्करण भी करता है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप धरातल पर क्षेत्रीय भिन्नता पायी जाती है, जिसका अध्ययन भूगोल विषय का मुख्य उद्देश्य है। इस विषय का विशद विवेचन, 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन आदि के भूगोलवेत्ताओं द्वारा हुआ। सन् 1830 ई. में रॉयल ज्योग्रैफिकल सोसायटी की स्थापना हुई, जिसके द्वारा किये गये कार्यों से तथा डॉर्विन के विकासवादी सिद्धांत के प्रतिपादन द्वारा भूगोल के विषय स्वरूप को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। भूगोल विषय प्राकृतिक व मानव दो भागों में बंटा हुआ है। मानव भूगोल का उदगम प्राकृतिक भूगोल की अपेक्षा नवीनतम है। 18वीं शताब्दी के प्रमुख भूगोलवेत्ता जॉन रीनहाल्ड फास्टर, जॉन जार्ज फास्टर तथा जॉन कुक द्वारा प्रतिपादित अनेक मान्यताओं के आधार पर किया गया, मानव व प्रकृति के अन्तर्सबंध का विवेचन मानव भूगोल के विकास के लिये ठोस प्रयास सिद्ध हुआ। मानव के अध्ययन की प्रधानता को काण्ट, हम्बोल्ट, रिटर, पेशेल, रेटजल, हेटनर आदि विद्वानों ने स्वीकार किया। रेटजल के वाल्कर कुण्डे नामक ग्रंथ के प्रकाशन से मानवीय अध्ययन की ओर अधिक बल मिला। हेटनर की मृत्यु के उपरांत उनकी कृति ''ए ज्योग्राफी ऑफ मैन'' के प्रकाशन से मानव संबंधी अध्ययन का पक्ष अधिक गतिशील हुआ।

मानव का अध्ययन ही जनसंख्या अध्ययन है, जनसंख्या भूगोल, भूगोल की एक नवीन शाखा है जिसमें जनसंख्या संबंधी विशेषताएँ, वृद्धि, वितरण, घनत्व आदि और क्षेत्रीय वितरण की भिन्नता का अध्ययन किया जाता है। इस शाखा का विकास प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत जर्मनी में राष्ट्रोत्थान के साथ, उसके बाद फ्रांस व अन्य यूरोपीय देशों में हुआ। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात इस विषय पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए। परन्तु जनसंख्या भूगोल को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय ट्रिवार्था को है जिन्होंने सन् 1953 ई. में अमेरिकी भूगोलविद परिषद के अध्यक्षीय भाषण में स्पष्ट रूप से मत व्यक्त किया कि क्रमबद्ध अध्ययन के रूप में जनसंख्या भूगोल एवं स्वतंत्र उपविषय के रूप में अध्ययन किया जाना चाहिये। ट्रिवार्था के विचारों के बाद ही 1954 में अमेरिका में जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन नामक विषय शुरू किया। इसके अनुसार, ''जनसंख्या भूगोल केन्द्रीय महत्व का विषय है, जिसका उद्देश्य मनुष्य की संख्या व उसकी विशेषताओं का, एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त भिन्नता का अध्ययन करना है।''

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (History of Population Study): प्राचीन काल से ही मानव, विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों से प्रेरित होकर, जनसंख्या संबधी ज्ञान प्राप्त करने के प्रति जिज्ञासु रहा है। राज्यों की रूचि, सुरक्षा तथा करों के माध्यम से आय प्राप्त करने की दृष्टि से, जनसंख्या संबंधी विशेषताओं अर्थात जन्म,

1. Hartshorne, R: Perspective on the Nature of Geography, London, 1960, p. 12
2. James, Preston, E. : American Geography : Inventory and Prospect, 1954, p. 105
3. James, Preston, E. ibld. p. 108.

मृत्यु, लिंग, स्थानांतरण आदि के अध्ययन में रही। ईसा से 1250 वर्ष पूर्व मिस्र में रामेज़ द्वितीय नरेश के राज्य काल में जीवन समंको को प्राप्त करने के लिये पंजीयन की प्रणाली लागू हुई थी। इसी प्रकार के प्रयत्न हिन्दू, बेबीलोन व चीन के प्राचीन सभ्यता में भी हो चुके है। भारतवर्ष में महाभारत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र तथा आईने ए अकबरी आदि ऐसे ग्रंथ है जो जनसंख्या अध्ययन के संदर्भ में प्रगति के द्योतक हैं। फलस्वरूप 15वीं शताब्दी के प्रारंभ में गिरजाघरों ने अपने सदस्यों से संबंधित मृत्यु, विवाह आदि का अभिलेख रखना प्रारंभ किया, जो बाद में जनसमुदाय के लिये लागू किया गया।

जनसंख्या अध्ययन विषय को प्रारंभ करने का श्रेय जान ग्रान्ट को है 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में यूरोप में जन व धन शक्ति में वृद्धि करने के उद्देश्य से जनसंख्या के विधि पहलुओं पर अध्ययन प्रारंभ हुआ। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अनेक विद्वानों ने जीवन-निर्वाहक साधनों तथा जनसंख्या के मध्य संतुलन का अध्ययन प्रारंभ किया, जिसमें माल्थस का अध्ययन अति महत्वपूर्ण रहा।

जनसंख्या भूगोल का विकास
(Development of Population Geography)

किसी भी क्षेत्र के प्रगति में जनसंख्या आवश्यक घटक होती है इसलिये भूगोलविदों तथा गैर भूगोलविदों में जनसंख्या से संबंधित जानकारी की जिज्ञासा प्राचीन काल से ही रही है। किन्तु जनसंख्या समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन का सूत्रपात अठारहवीं शताब्दी के अंत (1798) में टी. आर. माल्थस ने किया। उन्होंने जनसंख्या वृद्धि तथा खाद्य संसाधन के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था जिससे जनसंख्या अध्ययन को विशेष बल मिला।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में कतिपय समाज विज्ञानियों ने जनसंख्या के महत्वपूर्ण पक्षों का अध्ययन प्रस्तुत किया। सन् 1911 में प्रसिद्ध जीवविज्ञानी कार सौन्डर्स ने अपनी पुस्तक 'The Poplulation Problems-A Study in Human Evolution' में मुख्यतः जनसंख्या के आकार और विकास का विश्लेषण किया। प्रसिद्ध विचारक कार्ल मार्क्स ने सन 1929 में जनसंख्या समस्याओं का विश्लेषण समाजवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया और ऐसे अध्ययनों को नयी दिशा प्रदान की। इसी प्रकार ब्रिटिश रायल कमीशन, लीग ऑफ नेशन्स, यूनाइटेड आर्गनाइजेशन और इसी प्रकार के अन्य संगठनों, जैसे विश्व खाद्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन, खाद्य एवं कृषि संगठन आदि संगठनों की अपने अपने प्रकाशनों के माध्यम से जनसंख्या अध्ययन के विकास में उल्लेखनीय भूमिका रही है।

भूगोलविदों द्वारा जनसंख्या अध्ययन का इतिहास पूर्वोक्त से कुछ भिन्न है। लगभग एक शताब्दी पहले तक भूगोल को मुख्यतः भौतिक विज्ञान के निकट माना जाता था और इसमें मनुष्य की अपेक्षा भू-क्षेत्र के अध्ययन को अधिक महत्व दिया जाता था। बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ब्लाश, ब्रूंश, सोरे, डिमांजिया, ब्लांशर आदि ने भूगोल में मानव-केन्द्रित अध्ययन की प्रगति में उल्लेखनीय योगदान दिया। ब्लाश ने जनसंख्या को मानव भूगोल के अध्ययन के प्राथमिक तत्व के रूप में प्रस्तुत किया। फ्रांसीसी भूगोलविदों के प्रयास से भौगोलिक अध्ययनों में मनुष्य को केन्द्रीय स्थान प्राप्त हुआ और भूगोल में भूक्षेत्र की तुलना में जनसंख्या को अधिक महत्व प्रदान किया जाने लगा। संभवतः सर्वप्रथम (1947) सोवियत संघ (USSR) में जनसंख्या भूगोल को विश्वविद्यालयी पाठयक्रम में समाहित किया गया था। फ्रांसीसी भूगोलविद पियरे जार्ज अग्रणी व्यक्ति थे जिन्होंने सर्वप्रथम (1951) जनसंख्या भूगोल का मोनोग्राम प्रकाशित किया जिसका प्रकाशन कई खण्डों में हुआ।

आंग्ल भाषी विश्व में जनसंख्या के इतिहास का आरंभ सन् 1953 से होता है। इसी वर्ष विसकान्सिन विश्वविद्यालय में भूगोल के प्रोफेसर जी.टी. टिवार्था ने जनसंख्या भूगोल को विकसित करने का प्रस्ताव रखा और स्नातक स्तर पर जनसंख्या भूगोल का पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया। पी.ई. जेम्स (1954) ने अपनी सम्पादित पुस्तक 'जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन' में ट्रिवार्था के योगदान को अभिव्यक्त किया है। 1960 वें दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय देशों के कुछ विश्वविद्यालयों में जनसंख्या भूगोल का

पठन पाठन आरंभ हो गया था। सन् 1954 में जैलिन्स्की के साथ ट्रिवार्था का 'उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका में जनसंख्या प्रतिरूप' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ जिसने भूगोलविदों में जनसंख्या अध्ययन के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। जनसंख्या भूगोल को संगठित स्वरूप प्रदान करने और इसे लोकप्रिय बनाने में ब्रिटिश भूगोलविद जॉन.आई. क्लार्क का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। वे अंतर्राष्ट्रीय भूगोल संघ के जनसंख्या आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी सेवा कर चुके हैं। क्लार्क द्वारा लिखित जनसंख्या भूगोल का प्रथम संस्करण सन् 1965 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने जनसंख्या भूगोल के विधितंत्र का अधिक स्पष्ट परीक्षण किया। इसके साथ-साथ उन्होंने गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों विधियों से इसके स्पष्टीकरण पर बल दिया कि जनसंख्या का वितरण, संघटन, प्रवास और विकास स्थानों की प्रकृति से किस प्रकार संबंधित होते है।

विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या भूगोल को लोकप्रिय बनाने और इसके अध्ययन क्षेत्र के निर्धारण में अमेरिकी भूगोलवेत्ता जैलिन्स्की का प्रमुख योगदान है यद्यपि वे जनसंख्या भूगोल के ढाँचे को बहुत स्पष्ट नहीं कर सके। जेलिन्स्की द्वारा लिखित पाठ्य पुस्तक A Prologue to Population Geography का प्रथम संस्करण सन् 1966 में प्रकाशित हुआ जिसमें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि जनसंख्या भूगोल किसी क्षेत्र की जनसंख्या का अध्ययन उस क्षेत्र की संपूर्ण प्रकृति के संदर्भ में करता है।

जनसंख्या भूगोल के विकास में कई अन्य भूगोलवेत्ताओं का भी उल्लेखनीय योगदान है जिन्होंने जनसंख्या भूगोल की पुस्तकों के लेखन तथा संपादन द्वारा अथवा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में जनसंख्या संबंधी लेखों के प्रकाशन द्वारा विषय के विकास में सहायता प्रदान की। इस संदर्भ में डैम्को (1970) आदि के कार्य विशेष उल्लेखनीय है। जी.जे. डैम्को (G.J. Demko) ने सन् 1970 में अपने कुछ सहयोगियों के साथ 'Population Geography-A Reader' नामक पुस्तक को सम्पादित किया जिसमें डैम्को सहित कई भूगोलवेत्तओं के जनसंख्या से संबंधित महत्वपूर्ण लेख सम्मिलित हैं। डैम्कों ने इस प्रकार के मॉडलों को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया जिसमें किसी क्षेत्र की संपूर्ण जनसंख्या लक्षणों को निर्धारित करने वाली प्रक्रियाओं को पूर्णरूप से समझा जा सके। पीटर्स तथा लारकिन (G.L. Peters and R.P. Larkin) ने संयुक्त रूप से सन् 1979 में जनसंख्या भूगोल पर 'Polulation Geography-Problems, Concept and Prospect' नामक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें साक्षरता के अतिरिक्त लगभग सभी महत्वपूर्ण लक्षणों के अध्ययन को सम्मिलित किया गया था। राब्रर्ट वुडस (Robert Woods) की पुस्तक 'Population Analysis in Geography' सन् 1979 में प्रकाशित हुई। इसमें जनसंख्या संरचना को स्पष्ट करने वाले मॉडलों की व्याख्या कुछ नवीन ढंग से की गयी है। इस प्रकार विश्व में अनेक विद्वानों के योगदान से भूगोल में जनसंख्या भूगोल की शाखा का उदय हुआ। इन विविध भू-वैज्ञानिकों के अलावा अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघों एवं समीतियों ने जनसंख्या भूगोल के विकास को नई दिशा प्रदान करने में योगदान दिया। इस योगदान में अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ की भी अहम भूमिका मानी जाती है।

भूगोल में जनसंख्या अध्ययन
(Study of Population in Geogrpahy)

मनुष्य को पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों वाले लोगों (जनसंख्या) के संबंध में ज्ञानार्जन की जिज्ञासा प्राचीन काल से ही रही है। किन्तु एक विज्ञान के रूप में जनसंख्या का अध्ययन निश्चय ही आधुनिक घटना है। प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक प्रशासनिक, सैन्य, आर्थिक, राजनीतिक आदि उद्देश्यों से जनसंख्या संबधी सूचनाओं के संग्रह की परम्परा थी जो प्रायः अनुमानों तथा व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होती थी। विभिन्न सामाजिक विज्ञानो में जनसंख्या का अध्ययन पृथक-पृथक दृष्टिकोणों तथा विधियों से किया जाता है। जनसंख्या के ऐतिहासिक तथा क्षेत्रीय प्रतिरूप की व्याख्या में भूगोल सहित विभिन्न समाजिक विज्ञानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व तक भूगोल को भौतिक विज्ञान के अधिक निकट माना जाता था और इसमें मानव की तुलना में भूक्षेत्र के अध्ययन को अधिक प्रमुखता दी जाती थी। भौतिक और मानवीय

तथ्यों की प्रमुखता के आधार पर भूगोल को परम्परागत रूप से दो प्रधान शाखाओं में विभक्त किया जाता है- भौतिक भूगोल और मानव भूगोल। मानव भूगोल में मनुष्य और उसके पर्यावरण के मध्य अन्तर्संबंधों तथा उनसे उत्पन्न क्षेत्रीय प्रतिरूपों का विश्लेषण किया जाता है। इसमें जनसंख्या सहित अन्यान्य सांस्कृतिक तथ्यों का अध्ययन सम्मिलित होता है। बढ़ते मानवीय महत्व के परिणामस्वरूप पिछले तीन चार दशकों में भूगोल को एक सामाजिक विज्ञान का स्थान प्रदान किया जाने लगा। इस प्रकार अब भौगोलिक अध्ययन में भूक्षेत्र के स्थान पर मानव को अधिक महत्व दिया जाने लगा। जनसंख्या तथा उससे संबंधित समस्याओं की व्यापकता के सार्थक अध्ययन के उद्देश्य से भूगोल में विशिष्टीकरण की प्रवृत्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है और मानव भूगोल की अनेक शाखाएँ एवं उपशाखाएँ विकसित हुई हैं जिनमें जनसंख्या भूगोल भी एक शाखा है।

जनसंख्या भूगोल की परिभाषाएँ
(Defination of Population Geography)

जनसंख्या भूगोल, भूगोल की एक नवीन शाखा है जिसके अंतर्गत जनसंख्या के विभिन्न तत्वों में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नता का क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है। प्रमुख जनसंख्या भूगोलविदों के अनुसार जनसंख्या भूगोल की परिभाषाएँ अग्रांकित हैं –

(1) जी.टी. टिवार्था के अनुसार– जनसंख्या भूगोलविदों में अग्रणी जी.टी. ट्रिवार्था ने जनसंख्या भूगोल की परिभाषा भूगोल की प्रकृति के आधार पर किया है। भूगोल में क्षेत्रीय भिन्नता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अतः इसी को अनुकूल ट्रिवार्था ने जनसंख्या भूगोल को भूतल पर जनसंख्या के वितरण में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नता के अध्ययन का विषय माना है। उनके अनुसार ''जनसंख्या भूगोल के मूल तत्व जनसंख्या द्वारा आच्छादित(आवासित) पृथ्वी के प्रादेशिक भिन्नताओं को समझने में निहित है।''[1]

(2) विलवर जेलिन्सकी के अनुसार- अमेरिका के प्रसिद्ध जनसंख्या भूगोलवेत्ता विलवर जैलिन्स्की की जनसंख्या भूगोल की पाठ्य पुस्तक (A Prologue to Population Geography) सन् 1966 में प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने जनसंख्या भूगोल को किसी क्षेत्र की संपूर्ण प्रकृति के संदर्भ में उस क्षेत्र की जनसंख्या का अध्ययन करने वाले विज्ञान के रूप मे प्रतिपादित किया है। उन्होंने जनसंख्या भूगोल की एक विस्तृत परिभाषा दी है जो इस प्रकार है - ''जनसंख्या भूगोल वह विज्ञान है जो उन विधियों की व्याख्या करता है जिसमें स्थलों की भौगोलिक प्रकृति निर्मित होती है और इसके प्रतिक्रिया स्वरूप जनसंख्या तत्वों का एक समूह उत्पन्न होता है जो क्षेत्र और समय दोनों के संदर्भ में परिवर्तनशील होता है क्योंकि वे तत्व परस्पर तथा अनेक अजंनाकिकीय तत्वों के प्रति अंतर्क्रिया करते हुए अपने व्यवहारिक नियमों का अनुकरण करते हैं।''[2]

(3) जॉन आई. क्लार्क के अनुसार- ब्रिटिश भूगोलविद जॉन आई. क्लार्क (John I. Clarke) की जनसंख्या भूगोल की प्रथम पाठय पुस्तक सन 1965 में प्रकाशित हुई। उन्होंने जनसंख्या भूगोल के गुणात्मक तथा मात्रात्मक पक्षों के विश्लेषण के साथ ही उनके क्षेत्रीय भिन्नताओं के अध्ययन को प्रमुखता प्रदान की। उनका मानना है कि जनसंख्या भूगोल भूतल पर जनसंख्या वितरण में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नताओं को उसके भौतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ में जानने का प्रयत्न करता है। क्लार्क के अनुसार ''जनसंख्या भूगोल यह प्रदर्शित करता है कि जनसंख्या के वितरण, संघटन, प्रवास और वृद्धि में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नताएँ स्थानों की प्रकृति में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नताओ से किस प्रकार संबंधित है।''[3]

---

1. "The essence of population geography lies in the understanding of regional differences in the earth's covering of peple". ***- G.T. Trenwarth (1953)***
2. "The science that deals with the ways in which the geographic character of places is formed by and in turn reacts upon, a set of population phenomena that vary within it through both space and time as they follow their own behavioural laws interacting one with another and with numerous non-demographic phenomena." ***- W. zelinsky (1966)***
3. "Population geography is concenred with demonstrating how spatial variations in the distribution composition, migration and growth of population are related to the spatial variations in the nature of places." ***- John. I. Clark (1965)***

(4) जी.जे. डैम्को के अनुसार- अमेरिकी भूगोलवेत्ता डैम्कों ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ सन् 1970 में जनसंख्या भूगोल की एक पुस्तक सम्पादित की। इसमें डैम्को ने जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन, स्वयं लिखा है। डैम्कों के शब्दों मं जनसंख्या भूगोल की परिभाषा इस प्रकार है "जनसंख्या भूगोल (भूगोल) विषय की वह शाखा है जो मानवीय जनसंख्या के जनांकिकीय तथा अजनांकिकीय विशेषताओं की क्षेत्रीय भिन्नताओं का विश्लेषण करता है।"[1]

(5) पी.ई. जेम्स के अनुसार- जनसंख्या भूगोल केन्द्रीय एवं महत्वपूर्ण तत्व के रूप में है, जिसके चतुर्दिक निवासियों की संख्या, गुण व प्रकार में प्राप्त क्षेत्रीय भिन्नता को प्रकाशित करने के उद्देश्य से गवेषणायें की जाती है।

(6) जनसंख्या भूगोल के विषय में पाश्चात्य भूगोलविदों और मार्क्सवादी रूसी भूगोलविदों के विचारों मे पर्याप्त अन्तर मिलता है । पाश्चात्य भूगोलविद जनसंख्या भूगोल को मानव भूगोल की उपशाखा के रूप में प्रस्तुत करते हैं जबकि रूसी भूगोलविद इस आर्थिक भूगोल का प्रमुख घटक एवं इसकी उपशाखा मानते हैं। भूगोल को एक पृथक शाखा के रूप में स्थापित तथा वर्तमान स्वरूप प्रदान करने में प्रमुख योगदान अमेरिका, ब्रिटिश आदि पश्चिमी भूगोलवेत्ताओं का ही माना जाता है।

(7) ए. मेलेजिन जैसे मार्क्सवादी विचारधारा के पोषक रूसी भूगोलविदों ने जनसंख्या के उत्पाद पक्ष को ही जनसंख्या वितरण प्रतिरूप का उत्तरदायी माना है और जनसंख्या भूगोल को आर्थिक भूगोल की उपशाखा के रूप में मान्यता प्रदान की है। मेलेजिन के अनुसार "जनसंख्या भूगोल जनसंख्या के वितरण तथा विभिन्न जनसंख्या समूहों में विद्यमान उत्पादक संबंधों और अधिवास तंत्र एवं समाज के उत्पादक उद्देश्य के लिए उसकी उपयुक्तता, उपयोगिता तथा प्रभावशीलता का अध्ययन है।" इस प्रकार विविध विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि "जनसंख्या भूगोल, भूगोल की वह शाखा है जिसमें जनसंख्या के वितरण, संरचना, स्थानांतरण तथा परिवर्तन में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नताओं और किसी निर्वाचित क्षेत्र में पाये जाने वाले अन्तर्सबंधों से उत्पन्न सामाजिक आर्थिक प्रतिरूपों का अध्ययन किया जाता है।"[2]

जनसंख्या भूगोल का विषय क्षेत्र
(Scope or Content of Population Geography)

भूगोल की एक नवीन शाखा के रूप में प्रस्फुटित जनसंख्या भूगोल विकासमान अवस्था में है और इसके अध्ययन क्षेत्र या विषय वस्तु का निर्धारण अभी पूर्णता को नहीं प्राप्त कर सका है। इसकी गत्यात्मक प्रकृति के कारण ही समय-समय पर इसमें विभिन्न नये-नये पक्षों को समाहित किया जाता रहा है। जनसंख्या भूगोल के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य है और इसी से संबंधित विभिन्न पक्षों का भौगोलिक अध्ययन ही इसकी मूल विषय-वस्तु है। यहाँ कुछ प्रमुख जनसंख्या भूगोलवेत्ताओ द्वारा प्रस्तावित जनसंख्या भूगोल के विषय क्षेत्र की रूपरेखा का विवेचन किया गया है।

(1) **जी.टी. ट्रिवार्था** ने सन् 1953 में जनसंख्या भूगोल को क्रमबद्ध भूगोल की एक शाखा के रूप में संस्थापित किया। ट्रिवार्था द्वारा प्रस्तावित जनसंख्या भूगोल का विषय-क्षेत्र निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त है –

(i) **भूतकालीन जनसंख्या भूगोल** (Geography of population in past) - इसमें जनसंख्या के वितरण एवं विकास का अध्ययन विभिन्न ऐतिहासिक कालों के अनुसार किया जाता है।

---

1. "Polulation geography is the study of population distribution and productive relationships existing within various population groups, the settlement network and its fitness, usefulness and effectiveness for productive goal of a society. ***- G.J. Demco***
2. "Population geography is that branch of geography which treats the spatia variations in distribution, composition, migration and change of population and the socio economic patterns resulted by inter relationship between population and environment of any given area." ***- A. Melezin (1963)***

Login | Register

Kopykitab
Same textbooks, klick away

Search by Title / Author / ISBN / Descri

PRODUCT NOT FOUND!

Product not found!

continue

School Books

Oswaal Books
Class 9th Books
Class 10th Books
Class 11th Books
Class 12th Books

Engineering Books

RGPV Books & Notes
VTU Books & Notes
Free Engineering Books
Information Technology Books
Electrical Engineering Books

Competitive Exams

Bank PO Exam

Gate Books
Teaching Exams Books
AIEEE-NIT-JEE MAINS Books
UPSC Books

Professional Courses

ICSI Books & Study Materials
Chartered Accountant Books
Company Secretary Books
ICSI 7 days Trial
Latest Scanners

About KopyKitab.com

Kopykitab is India's 1st digital & multiple publishers platform. Kopykitab has largest collection of e-textbooks & branded digital content in Higher & School education. We have strong foundation of leading publishers & tutorials as content partners.

We offer e-textbook, Test Preparation, Notes & LMS for various curriculam to Students, Professionals & Institutes. These are same textbooks, way smarter. Our goal is to make education affordable & accessible.
A user can access the content in all electronic devices e.g. Mobile, PC & Tabs

Information

About Us
FAQ
Privacy Policy
Terms & Conditions
Payment Information

Links

ICSI eLibrary
KopyKitab eBook Reader
Contact Us
Site Map

My Account

Refer & Earn
My Account
Order History
Wish List
Newsletter
My Library
Office 365 Email Login
Google Login

Verified By

©2016 DigiBook Technologies (P) Ltd, All Rights Reserved. An ISO 9001:2008 Certified Company